M A (1st semester)
जाति व्यवस्था के सम्बंध में पेरियार के विचार।

द्वारा

अंजनी कुमार घोष

पेरियार के भाषणों और लेखों के हवाले से जाति-संबंधी उनके विचारों को जाना जा सकता है और उनकी समीक्षा भी की जा सकती है। व्यावहारिक भाषा और तर्कों के माध्यम से उन्होंने अपनी बातें कहीं। ब्राह्मणों के द्वारा की गयी हिन्दू धर्म की व्याख्या में अनेक अंतर्विरोध हैं, जिन पर विस्तार से डॉ आम्बेडकर ने 'हिन्दू धर्म की पहेलियाँ' पुस्तक में लिखा है। डॉ. आम्बेडकर की तरह का व्यवस्थित लेखन पेरियार ने नहीं किया था, मगर सोद्देश्यता से परिपूर्ण उनके लेखन में मार्गदर्शन की अद्भुत क्षमता थी। 'विदुथलई' के सम्पादकीय में 04 मार्च 1969 को वे लिखते हैं, "कुछ वक्त पहले वैष्णव और शैव पुजारी केरल के लोगों के तर्ज़ पर अपने बालों में चोटियाँ करते थे। अब यह भेद मिट गया है। आज ब्राह्मण सोचते हैं कि जो भी होता है, जो भी बदलता है उस सबके बीच उनकी सर्वोच्च जाति और सर्वोच्च दर्ज़ा कायम है। ऐसे में वे उच्च धर्म के नाम पर कुछ भी करने के लिए पूरी तरह तैयार नज़र आते हैं।" पेरियार अपने तर्कों और जानकारियों से यह सिद्ध करते रहे कि हिन्दू धर्म से जुड़ी बातें मूलतः ब्राह्मण-वर्चस्व को कायम करती हैं। इसकी वैचारिक प्रक्रिया, मान्यता, कर्मकांड आदि में इस वर्चस्व को बनाए रखने के हिसाब से परिवर्तन आए हैं। इसलिए हिन्दू धर्म के परिवर्तनों को प्रगतिशीलता से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। हिन्दू मतों को आमने-सामने रखकर देखा जा सकता है कि इनमें परस्पर कितनी झूठी बातें हैं। बताया जाता रहा है कि वैदिक मंत्र पवित्र होते हैं। इन्हें सुनने का अधिकार सबको नहीं है। मगर यह बात सब जगह समान रूप से नहीं मानी जाती है। पेरियार इसी सम्पादकीय में लिखते हैं, "पंजाब में आर्यसमाजी वैदिक मन्त्रों का उच्चारण जोर-जोर से करेंगे ताकि कुत्ते, घोड़े, गधे आदि सब सुन सकें। तमिलनाडु में वे कहते हैं कि वैदिक ध्वनियाँ तो हमारे कानों में नहीं पड़नी चाहिए।" इसी क्रम में वे आगे कहते हैं , "सन् 1930 में पाँचवीं जाति के लोग मन्दिर में नहीं घुस सकते थे। केरल में तो चौथे वर्ण के कुछ लोग भी मन्दिर के घुसने के पात्र नहीं थे। आज हर कोई मन्दिर में प्रवेश कर सकता है। ऐसा देखकर कोई देवता मन्दिर छोड़कर भाग नहीं गया है।" इन विसंगतियों का उपयोग ब्राह्मण-वर्चस्व को बनाए रखने के लिए किया जाता रहा है। जरूरत के अनुसार वे अपने को परम्परावादी या सुधारवादी के रूप में पेश करते रहे हैं। पेरियार के जाति-संबंधी विचारों का एक पक्ष यह भी है कि वे चाहते थे कि द्रविड़ों को हिन्दू न माना जाए। हिन्दू धर्म की मान्यताओं में आर्यों और ब्राह्मणों की प्रमुखता को देखते हुए उन्होंने ऐसा विचार बनाया था। 6 जनवरी 1945 को 'कुडियारासू' (रिपब्लिक) के सम्पादकीय में पेरियार ने लिखा, "हम लम्बे समय से कहते रहे हैं कि हिन्दू धर्म का अर्थ है आर्य धर्म और हिन्दू आर्य हैं। इसलिए हम यह कहते रहे हैं कि हम द्रविड़ों को खुद को हिन्दू नहीं कहना चाहिए न ही खुद को हिंदुत्व को मानने वाला कहना चाहिए। इसी के अनुरूप सन् 1940 में जस्टिस पार्टी के प्रांतीय सम्मलेन में मेरी अध्यक्षता में एक प्रस्ताव पारित हुआ। फैसला किया गया कि हम द्रविड़ खुद को हिन्दू नहीं कहेंगे और न ही यह कहेंगे कि हम हिन्दू धर्म से ताल्लुक रखते हैं।" आर्यों को विदेशी मानने वाले पेरियार ने अनेक जगहों पर लिखा और कहा है कि आर्य लोगों की व्यवस्था ही जाति-व्यवस्था के लिए जिम्मेदार रही है। आर्यों के ग्रंथों में उनके जीवन का एक ही लक्ष्य दिखाई पड़ता है कि वे आराम से रहें और एक बड़ा वर्ग उनकी सेवा करता रहे। शोषण का महिमामंडन इन पुस्तकों का मूल स्वर है। वे लिखते हैं, "चार वर्णों की स्थापना के लिए कौन जिम्मेदार है? हमारे समाज की एकता को नष्ट करनेवाली सैंकड़ों जातियाँ किसने बनाई हैं और देश की एकता को नष्ट किसने किया ? क्या यह काम आर्यों ने नहीं किया ? इन वर्णों और जातियों को बनाकर और एक जाति का दूसरी जाति से हर तरह का संपर्क रोककर, हर जाति के लिए काम और कर्तव्य निर्धारित करके क्या आम जनता के बीच की एकता को खंडित नहीं किया गया ? क्या यही वजह नहीं है कि हमारे लोग देश के बारे में चिंता नहीं करते और अन्य लोगों की भी उनको कोई परवाह नहीं रहती? हम शर्मिंदगी के शिकार हैं और आर्यों और विदेशियों के गुलाम बन गए हैं।" पेरियार चाहते थे कि अंग्रेजों के रहते हुए ही जाति-व्यवस्था के अंत का सटीक प्रयास किया जाए। उनका विश्वास था कि सत्ता के स्तर पर बड़े प्रयास के बगैर यह व्यवस्था समाप्त नहीं हो सकती। अंग्रेजों के जाने के बाद इस व्यवस्था के और भी सुदृढ़ होने की आशंका उनके मन में पहले से ही थी, "भारत में आज 1,000 में से 999 लोग जातिभेद खत्म करने के इच्छुक नहीं हैं। बल्कि वे ऊँची जाति में शामिल होना चाहते हैं ताकि वे अन्य निचली जातियों पर रसूख कायम कर सकें।"

पेरियार ने हिन्दू धर्म की बनावट को जाति-आधारित बताया है। उन्होंने विवरण-सहित बताया कि हिन्दू धर्म के संप्रदाय हों या ग्रन्थ, उन सबमें जाति की बुनियाद मौजूद है। 03 जनवरी 1931 को दिए गए अपने भाषण में उन्होंने कहा था, "हिन्दू धर्म में बात

चाहे वैष्णव संप्रदाय की हो या शिव संप्रदाय की क्या आप बिना भेदभाव, ऊँची-नीची स्थापना वाले देवताओं या अवतारों वाली जातियाँ दिखा सकते हैं ? इसके अलावा ईश्वर की लीलाएँ, ईश्वर की राह दिखाने वाले महात्मा, ईश्वरीय गतिविधि दर्शाने वाले पुराण अथवा ऐतिहासिक घटनाएँ, सभी जातिवादी विचारों से भरे हुए हैं। 64 नयनार (शैव संत) 64 जातियों से ताल्लुक रखते थे। 12 आलवार (वैष्णव संत) 12 जातियों से थे। अगर आप मनु धर्म को हिन्दू धर्म का आधार मानते हैं तो आपको कई जातियों और उनके बीच भेदभाव के सन्दर्भ देखने को मिलेंगे। आप इसे चाहे जिस नज़र से देखिए, भले ही यह धर्म में आपकी ताज़ा आस्था हो या उसके आधार पर ईश्वर में या वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास में, आप कभी यह नहीं कहेंगे कि जातिगत भेद मौजूद नहीं है।" इस तरह पेरियार की दृढ़ मान्यता थी कि जातिगत भेदभाव का सैद्धांतिक आधार हिन्दू धर्म की स्थापनाओं में मौजूद है। पेरियार के भाषणों और आलेखों से अनेक उद्धरण लिए जा सकते हैं जिनमें उन्होंने जाति-व्यवस्था पर विचार किया है। पेरियार का मुख्य जोर इस बात पर था कि धर्म का सहारा पाकर यह व्यवस्था ज्यादा क्रूर हो गयी है। उनके विचारों को क्रमबद्ध किया जाए तो कहा जा सकता है कि हिन्दू समाज की इस बुराई का आधार उन्होंने धर्म के भीतर तलाशा था। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि हिन्दू धर्म आर्य नस्ल की देन है और स्पष्ट है कि इसका द्रविड़ समाज से कोई अच्छा रिश्ता कभी न रहा है और न कभी हो सकता है। नस्ल की श्रेष्ठता की बुनियाद को छोड़कर ही आर्य और द्रविड़ समाज के बीच उचित सम्वाद हो सकता है। मगर, सांस्कृतिक दृष्टि से इतने काँटे और विष बोए जा चुके हैं कि इनका निदान आसान तो बिल्कुल नहीं है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने 'रामकथा' का जिक्र बार-बार किया। वे इस पुस्तक को आर्यों की नस्लवादी श्रेष्ठता का आग्रह रखनेवाली पुस्तक के रूप व्याख्यायित करते थे। उनका विचार था कि इस कथा में कोशिश की गयी है कि आर्यों को श्रेष्ठ बताया जाए और द्रविड़ों को निकृष्ट।

जाति-संबंधी पेरियार के विचारों में दूसरा पक्ष है ब्राह्मण-श्रेष्ठता का। धार्मिक मान्यताओं का पोषण करनेवाली पुस्तकें हों या सांस्कृतिक कथाओं को प्रस्तुत करनेवाली 'रामायण'-जैसी पुस्तकें। इन सभी पुस्तकों में किसी न किसी रूप में ब्राह्मण की श्रेष्ठता को स्थापित किया गया है। ब्राह्मण को धरती का देवता बताया गया है और हर हालत में उसे ऊँचा बताया गया है। यहाँ तक कि गलत काम में लिप्त रहनेवाले ब्राह्मण को पूज्य भी बताया गया है। उसे हर स्थिति में दंड-विधान से ऊपर बताया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि शेष जातियाँ स्वयं को जन्म से निम्न मानने की मानसिकता के बीच अपना जीवन व्यतीत करती रहें। यह ठीक है कि जाति के आधार पर होनेवाले व्यवहारों में समय के अनुसार कुछ परिवर्तन देखे गए हैं, उसे हर स्थिति में दंड-विधान से ऊपर बताया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि शेष जातियाँ स्वयं को जन्म से निम्न मानने की मानसिकता के बीच अपना जीवन व्यतीत करती रहें। यह ठीक है कि जाति के आधार पर होनेवाले व्यवहारों में समय के अनुसार कुछ परिवर्तन देखे गए हैं, मगर मूल बात जस की तस बनी रही है। विभिन्न जातियों की उत्पत्ति के बारे में जो कथाएँ रची गयी हैं उनमें अपमानजनक प्रसंग भरे पड़े हैं। शायद ही कोई जाति होगी जो अवैध सम्बन्ध से उत्पन्न न मानी गयी होगी। केवल ब्राह्मण जाति के बारे में इस तरह की कोई अपमानजनक कथा नहीं मिलती है। जाहिर है कि इस तरह की कथाएँ काल्पनिक हैं और इनका भी उद्देश्य यही है कि शेष जातियों की तुलना में ब्राह्मण को पवित्र, कुलीन और वैध बताया जा सके। पेरियार की दो टूक राय है कि गैर-ब्राह्मण जातियों को इन ग्रंथों पर विश्वास नहीं करना चाहिए और इनके भीतर मौजूद षड्यंत्रों को समझते हुए इनका पर्दाफाश करना चाहिए। स्वयं पेरियार यह काम अपने जीवन भर करते रहे। अपने इस काम को मजबूती प्रदान करने के लिए उन्होंने संगठन बनाए, पत्रिकाएँ निकालीं, भाषण दिए, सम्मलेन करवाए, सम्मेलनों में अनेक प्रस्ताव पारित करवाए, कांग्रेस के सम्मेलनों में अनेक बार टकराव मोल लिया। पेरियार के विचार केवल शब्दों तक सीमित नहीं थे। वे अपने विचारों को लेकर समाज में उतरते थे।